आरती श्री राधाकृष्ण जी की

आरती जुगलकिशोर की कीजै ।
तन मन धन न्योछावर कीजै ।।

गौर श्याम मुख निरखन दीजै ।
प्रेम स्वरूप नयन भर पीजै ।।

रवि शशि कोटि बदन की शोभा ।
ताहिं निरखि मेरो मन लोभा ।।

मोर मुकुट कर मुरली सोहै ।
नटवर वेष निरख मन मोहै।।

ओढ़े पीत नील पट सारी ।
कुञ्जबिहारी गिरिवरधारी ।।

स्वरूप मनोहर मंगलकारी।
आरती करत सकल ब्रजनारी ।।

नंदनंदन बृजभानु किशोरी ।
परमानंदन प्रभु अविचल जोरी ।।

आरती जुगलकिशोर की कीजै ।

विवरण

अपना धन-मन-तन न्योछावर करके इन जुगलकिशोर(राधा-कृष्ण) की आरती है । गोरी/राधा एवं श्याम का मुख निरखते रहने को जी चाह रहा है तथा इनका ये प्रेम भरा स्वरूप आँखों में बसा लेने को जी हो रहा है । सूर्य एवं चन्द्र के समान इनके बदन की शोभा है, ऐसी शोभा को

देखते रहने का मेरा मन लालायित रहता है ।

इनके सिर पर मोर का मुकुट एवं हाथों में मुरली शोभित हो रही है, इनका ये नट वर रूप देखकर मन इनके प्रति मोहित हो जाता है । व्रज की गलियों में विहार करने वाले इन गिरधारी के श्याम शरीर पर पीला पीताम्बर (ओढ़ने का वस्त्र)बहुत ही शोभ रहा है ।

इनका रूप मन को हरने वाला है, एवं मंगल करने वाला है । नंद के नंदन (कृष्ण) एवं बृषमानु की लाड़ली (राधा) की आरती ब्रज की सभी औरतें उतार रहीं हैं । ऐसी सुन्दर जोड़ी को देखकर मन परम आनन्द से भर जाता है । ऐसे जुगलकिशोर (राधा-कृष्ण) की आरती है ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.